व्यवस्था के काम और विश्वास के काम में क्या अंतर है?

आइए हम परमेश्वर के वचन की जानकारी में साथ-साथ बढ़ें।

जब हम बाइबल पढ़ते हैं, विशेषकर रोमियों 4 और याकूब 2 में, तो हमें ऐसा प्रतीत होता है कि विरोधाभास है। पौलुस कहता है कि मनुष्य विश्वास से धर्मी ठहरता है, न कि कामों से। लेकिन याकूब कहता है कि केवल विश्वास से नहीं, बल्कि कामों से भी मनुष्य धर्मी ठहरता है।

तो क्या बाइबल स्वयं का विरोध करती है? या हमारी समझ को सुधार की आवश्यकता है?
आइए हम दोनों अंशों को ध्यान से अध्ययन करें।

1. पौलुस (रोमियों 4): धर्मी ठहरना विश्वास से है, व्यवस्था के कामों से नहीं
रोमियों 4:1–6

“तो हम क्या कहें कि हमारे पूर्वज अब्राहम ने शरीर के
अनुसार क्या पाया?
क्योंकि यदि अब्राहम कामों से धर्मी ठहराया गया, तो उसके
पास घमंड करने का अवसर है—परन्तु परमेश्वर के सामने नहीं। पवित्रशास्त्र क्या कहता है? ‘अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिये धर्म गिना गया।’
अब जो काम करता है, उसका मजदूरी उपहार नहीं, परन्तु कर्ज

व्यवस्था के काम और विश्वास के काम में क्या अंतर है?

समझा जाता है।
परन्तु जो काम नहीं करता, परन्तु अधर्मी को धर्मी ठहराने
वाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास धर्म गिना जाता है।
ठीक वैसे ही दाऊद भी उस मनुष्य के धन्य होने के विषय में
कहता है, जिसे परमेश्वर बिना कामों के धर्म गिनता है।”

यहाँ पौलुस स्पष्ट रूप से “व्यवस्था के कामों” की ओर संकेत करता है—अर्थात् आज्ञाओं, नियमों, रीति-रिवाजों या नैतिक प्रयासों का पालन करके परमेश्वर के सामने धर्मी ठहरना। पौलुस कहता है कि कोई भी अपने भले कामों या व्यवस्था का पालन करके परमेश्वर के सामने धर्मी नहीं ठहर सकता, क्योंकि:

रोमियों 3:23

“सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।”

इसी प्रकार भजन संहिता भी समस्त मानवता के पाप को बताती है:

भजन संहिता 14:2–3

व्यवस्था के काम और विश्वास के काम में क्या अंतर है?

“यहोवा स्वर्ग से मनुष्यों की ओर देखता है,
कि कोई समझदार है क्या? कोई परमेश्वर का खोजी है क्या?
सब के सब भटक गए हैं; सब भ्रष्ट हो गए हैं;
कोई भलाई करनेवाला नहीं, एक भी नहीं।”

पौलुस का निष्कर्ष है कि परमेश्वर के सामने धर्म एक वरदान है, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिलता है, न कि अच्छे काम करने या धार्मिक होने से।

इफिसियों 2:8–9

“क्योंकि अनुग्रह ही से तुम विश्वास के द्वारा उद्धार पाए
हो; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है।
न कामों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।”

इसलिए यदि कोई कहे, “मैं न तो चोर हूँ, न व्यभिचारी, न मद्यपान करनेवाला हूँ,” तो भी यह उद्धार पाने के लिए पर्याप्त नहीं। केवल एक ही व्यक्ति ने व्यवस्था को सिद्ध रीति से पूरा किया—यीशु मसीह। आदम से लेकर अन्तिम मनुष्य तक सब असफल हुए

व्यवस्था के काम और विश्वास के काम में क्या अंतर है?

हैं।

2. याकूब (याकूब 2): बिना कामों के विश्वास मरा हुआ है
अब विचार करें याकूब 2:21–24:

“क्या हमारे पिता अब्राहम कामों से धर्मी न ठहरा जब उसने
अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया?
तू देखता है कि उसका विश्वास उसके कामों के साथ-साथ सक्रिय था और उसके कामों से उसका विश्वास सिद्ध हुआ।
और पवित्रशास्त्र पूरा हुआ, जो कहता है, ‘अब्राहम ने
परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिये धर्म गिना गया,’
और वह परमेश्वर का मित्र कहलाया।
तू देखता है कि मनुष्य केवल विश्वास से नहीं, बल्कि कामों से भी धर्मी ठहरता है।”

पहली दृष्टि में, याकूब पौलुस का विरोध करता हुआ प्रतीत होता है। परन्तु संदर्भ महत्वपूर्ण है।

पौलुस व्यवस्था के कामों (धार्मिक रीति से धर्म कमाने) की बात करता है।

याकूब उन कामों की बात करता है जो सच्चे विश्वास से उत्पन्न

व्यवस्था के काम और विश्वास के काम में क्या अंतर है?

होते हैं।

ये दोनों एक समान नहीं हैं।

याकूब 2:26

“जैसे आत्मा के बिना शरीर मरा हुआ है, वैसे ही विश्वास भी
बिना कामों के मरा हुआ है।”

सच्चा विश्वास हमेशा कामों द्वारा प्रकट होता है।

आज के समय में विश्वास के काम का उदाहरण
मान लीजिए किसी को मधुमेह है और डॉक्टर उसे कहता है कि चीनी या स्टार्च वाला भोजन न खाए। लेकिन वह व्यक्ति परमेश्वर के वचन पर विश्वास करता है:

मत्ती 8:17

“उसने हमारी दुर्बलताएँ ले लीं और हमारी बीमारियाँ उठा
लीं।”

व्यवस्था के काम और विश्वास के काम में क्या अंतर है?

वह विश्वास करता है कि यीशु के बलिदान से वह चंगा हो चुका है, और वह एक स्वस्थ व्यक्ति की तरह जीना शुरू करता है। यही विश्वास से उत्पन्न काम है—याकूब की शिक्षा का वास्तविक उदाहरण।

दो प्रकार के काम
काम का प्रकार किसने बताया क्या यह धर्म का आधार है? परिणाम व्यवस्था के काम पौलुस (रोमियों) नहीं दंड
विश्वास से उत्पन्न काम याकूब (याकूब) हाँ (विश्वास का प्रमाण) धर्मी ठहरना

अंतिम निष्कर्ष
हम परमेश्वर के सामने केवल विश्वास से धर्मी ठहरते हैं (रोमियों 4)।
परन्तु सच्चा विश्वास अपने आप को कामों के द्वारा प्रकट करता है (याकूब 2)।

गलातियों 5:6

“मसीह यीशु में न खतना कोई काम आता है, न खतना न होना, परन्तु प्रेम से प्रभावशाली विश्वास।”

व्यवस्था के काम और विश्वास के काम में क्या अंतर है?

इब्रानियों 10:38

“मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा; और यदि वह पीछे
हटेगा, तो मेरा मन उसमें प्रसन्न न होगा।”

क्यों केवल अच्छे काम पर्याप्त नहीं हैं?
भले ही कोई दयालु, दानी और पाप से दूर हो, यह उद्धार के लिए काफी नहीं। अन्य धर्मों के लोग भी अच्छे काम करते हैं, परन्तु यीशु मसीह पर विश्वास के बिना उनका उद्धार नहीं होता।

यूहन्ना 14:6

“यीशु ने कहा, ‘मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।’”

अंतिम वचन: विश्वास ही कुंजी है
हम विश्वास से क्षमा पाते हैं।

विश्वास से चंगे होते हैं।

व्यवस्था के काम और विश्वास के काम में क्या अंतर है?

विश्वास से हमारी प्रार्थनाएँ पूरी होती हैं।

विश्वास से हमें आत्मिक आशीषें मिलती हैं।

इसीलिए शैतान हमारे विश्वास पर आक्रमण करता है, ताकि हम यह मानें कि नियम निभाकर ही हम परमेश्वर के प्रिय हो सकते हैं। परन्तु उद्धार केवल मसीह के कार्य पर विश्वास करने से मिलता है।

हम अपने अच्छे चाल-चलन से धर्मी नहीं ठहरते, बल्कि यीशु मसीह पर विश्वास से धर्मी ठहरते हैं। और यह सच्चा विश्वास ही ऐसे काम उत्पन्न करता है जिन्हें याकूब “विश्वास के काम” कहता है। ये उद्धार का फल हैं, कारण नहीं।

प्रभु आपको आशीषित करे जब आप विश्वास से चलें और दृष्टि से नहीं।

ChatGPT can make mistakes

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp